⇒ बरसने लगी ओस की बूँदे..।

→ बच्चें, ओस की बूँदे..।

कभी मन चैन खो देता है।
सुख की तलाश में मंडराने लगता है।
रात के गहराई में डूब जाता है।
रेगिस्तान-सा यह मन तरसता है।

तब बरसने लगी ओस की बूँदे..।
~~मुझे लगी~~, बरस रही है आसमान के तारें।
इस सवेरा में ठंड की एक आस।
प्रकृति की खुद की रचना है, ओस।

यह नाज़ुक-सा होता है।
छोटे पत्तों पर अटक के सोता है।
प्रकृति और मुझे भी सहलाती है।
यह अनुभूति बार-बार चाहती है।

रात के अंधेरे को हटाकर...
आँगन की चमेली को छिड़ककर...
बरसने लगी ओस की बूँदे.. ।
अब यह मन, किसको ढूँढे..?

मेरी खिड़की की कोने में बैठते है।
एक दूसरे से टकराते है।
शरारती बसा है इनमें..।
फिर भी शुध्द है, तन में..।

यह बच्चों की याद दिलाती है।
शरारती, मासूम चेहरे के साथी है।
बच्चें ओस की बूँदे, जैसे ही।
नाज़ुक और मासूम, वैसे ही।

अंदर से होते है शुध्द।
मन में छुपाता है, न कोई युध्द।
शरारती से एक दूसरे से टकराते है।
ओस की जैसे दाँतों से मुस्कुराते है।

जब मैं पास जा कर तो देखा था।
इन्द्र धनुष-सा रंग बसा था।
मेरी मुन्नी की सपने जैसे रंगीन ...।
बच्चों के दिल होते हैं, अंधेरे से हीन।

सुरज के किरणों से सुंदर बनता है।
आशा की किरणों से, बच्चा आगे बढ़ता है।
काँच जैसे चमकती है।
जैसे हरेक बच्चा मुस्कुराता है।

सबसे चमत्कार हीरा है।
मन ही मन में बच्चों भोला है।
इस ओस की बूँदे की बरसात...।
मन में जगाती है, कई सारी बात।

गुलाब की कली को चुंबन देकर
प्रकृति की आभूषण बनकर
मेरी पन्नों की कोरापन को भरता है।
कविता मुझ में, झरना-सा बहता है।

यह दिल में सुकून देता है।
इन्हे छूते तो ये जमीन को चुमता है।
इनके छोटे दिल भी उतना नाज़ुक है।
छोटे बच्चे खुला संदुक है।

~~अरे! देखो इन नन्हे बूँदे को..~~
अरे! इन नन्हे बूँदे को देखो...
"बच्चे है"- फुसफुसाती है हवा की झोंके..।
नैना-नैनों में मोती-समान है।
इनके तो कई सारी अरमान है।

न छेडो, इनको..।
न ही नीचे गिरा दो..।
छोडो खेलने प्रकृति की गोद में..।
न तोडो सपने इनके, क्रोध में..।

हमेशा के लिए रूठा तो टूटेगा..।
जिंदगी में न कुछ बाँटेगा ।
पुचकारने दो प्रकृति की हाथों में..।
न तोड डालो छोटे-छोटे बातों में..।